डॉ.पी.एस.पाटील

अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री.मोहन मंगेशराव सावंत ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "राजेंद्र यादव का "उखड़े हुए लोग" संवेदना एवं शिल्प" मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है। इसमें शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। श्री.मोहन मंगेशराव सावंत के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर।

२४ दिसम्बर, १९९५

(डॉ.पी.एस.पाटील)
शोध निर्देशक

प्रख्यापन

"राजेंद्र यादव का "उखड़े हुए लोग" संवेदना एवं शिल्प" लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल.(हिंदी), उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

(श्री मोहन मंगेशराव सावंत)
शोध-छात्र

कोल्हापुर।
दि. दिसम्बर, १९९६

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री.मोहन मंगेशराव सावंत द्वारा प्रस्तुत "राजेंद्र यादव का "उखड़े हुए लोग" : संवेदना एवं शिल्प" लघु शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

२७, दिसम्बर, १९९६

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

राजेंद्र यादव

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका :-

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय :- "राजेंद्र यादव : व्यक्तित्व एवं सृजन।" 1-22

१:१ व्यक्तित्व।

१:२ सृजन।

१:३ निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय :- 'उखड़े हुए लोग' का कथ्य। " 23-44

२:१ कथावस्तु संगठन।

२:२ कथावस्तु के गुण।

२:३ कथानक की विशेषताएँ।

२:४ कथावस्तु के प्रकार।

२:५ अभिव्यक्ति के प्रकार।

२:६ कथावस्तु की समीक्षा।

२:७ शीर्षक की सार्थकता।

२:८ निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" की सामाजिक संवेदना। " 45-69

३:१ संवेदना शब्द का अर्थ।

३:२ समाज से तात्पर्य।

३:३ समाज की परिभाषा।

३:४ सामाजिक संवेदना का अर्थ।

३:५ "उखड़े हुए लोग" की सामाजिक संवेदना।

३:६ निष्कर्ष।

पृष्ठ संख्या

चतुर्थ अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" की राजनीतिक संवेदना। " 70-93

४:१ राजनीति की परिभाषा।

४:२ साहित्य और राजनीति का पारस्परिक संबंध।

४:३ राजनीतिक उपन्यास की परिभाषा।

४:४ "उखड़े हुए लोग" की राजनीतिक संवेदना।

४:५ निष्कर्ष।

पंचम अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" का शिल्प"। 94-138

५:१ शिल्प-विधि : स्वरूप।

५:२ शिल्प का अर्थ।

५:३ भाषा।

५:४ शैली।

५:५ निष्कर्ष।

उपसंहार 139-149

संदर्भ-ग्रंथ-सूची। 150-152

-o-o-o-o-o-o-

प्राक्कथन

:- प्राक्कथन :-

उपन्यास गद्य-साहित्य की सर्वाधिक सशक्त एवं व्यापक विधा है। उपन्यास विधा द्वारा उपन्यासकार को विस्तृत कथावस्तु के तथा जीवन का सर्वांगिण चित्रण प्रस्तुत करने का अवसर मिल जाता है। इसीकारण आज उपन्यास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं लोकप्रिय हो गया है। उपन्यासकार अपरी स्वना में स्त्री-पुरूषों के बनते-बिगड़ते तथा बदलते सम्बन्धों, विचारों, सुख-दुःखों और संघर्षो का चित्रण करते हुए जीवन के बारे में अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों ने आधुनिक भारतीय जीवन दर्शन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। जिन समस्याओं को इन लेखकों ने उजागर किया हैं, उन समस्याओं को पढ़कर पाठक को लगता है कि हमारी अपनी समस्याएँ ही इसमें चित्रित है। उपन्यासकारों की इस नई पीढ़ी में राजेंद्र यादवजी को विशेष रूप से उल्लेखनीय माना जा सकता है।

<u>प्रेरणा</u> :-

बी.ए. में पढ़ते समय मन्नू भंडारी के "महाभोज" उपन्यास ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। जिसके फलस्वरूप उपन्यास पढ़ने की मेरी रूचि बढ़ती गई। फिर मैं श्रीमती मन्नू भंडारी के उपन्यासों को पढ़ता गया। मन्नूजी तथा राजेंद्र यादव दोनों द्वारा लिखा उपन्यास "एक इंच मुस्कान" पढ़ा। "एक इंच मुस्कान" में यादवजी ने मध्यवर्गीय लेखक की ट्रेजेड़ी, पराजय और खण्डित व्यक्तित्व को अत्यंत सफलता के साथ व्यक्त किया है उससे मैं प्रभावित हुआ और यादवजी के अन्य उपन्यास पढ़े। उसमें उनके "उखड़े हुए लोग" उपन्यास में व्यक्त स्वातंत्र्योत्तरकालिन राजनीतिक नेताओं के पैरोंतले सिसकती, छटपटाती निम्न और मध्यवर्ग की जिंदगी और राजनेताओं की कुटिल, घृणित राजनीति को पढ़कर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। अतः मैंने यादवजी के एक-एक उपन्यास को पढ़ना आरंभ किया। आधुनिक मानव जीवन की दमघोटू जिंदगी तथा उसमें बनते-बिगडते-बदलते सम्बन्धों ने मुझे सोचने पर विवश किया और संघर्षमय

मानव जीवन के प्रति इसी आस्था ने ही मुझे प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए प्रेरित किया। अतः मैंने राजेंद्र यादवजी की रचना पर ही एम.फिल करने का निश्चय किया। मैंने मेरे परम श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.पी.एस.पाटीलजी तथा डॉ.अर्जुन चव्हाणजी से विचार विमर्श किया और राजेंद्र यादवजी के "उखड़े हुए लोग" उपन्यास पर अपना शोध-कार्य करना आरम्भ किया।

राजेंद्र यादवजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अब तक निम्नांकित शोधकर्ताओं ने एम.फिल तथा पीएच.डी के लिए शोधकार्य किए है -

अ) एम.फिल.

१. "राजेंद्र यादव की कहानियों में चित्रित समस्याऐं"

भारत श्रीमंत खिलारे (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर)

२. "राजेंद्र यादव के "सारा आकाश" उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन"

शेख नसरीन युसुफ (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर)

३. "राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित परिवार"

शेळके भारती (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर)

ब) पीएच.डी.

१. "राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन एक अनुशीलन"

अर्जुन चव्हाण (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर)

२. "राजेंद्र यादव : संवेदना और शिल्प"

कुमारी शशिकला त्रिपाठी (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

राजेंद्र यादवजी के "उखड़े हुए लोग" उपन्यास को लेकर अब तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने अनुसंधान के लिए "राजेंद्र यादव का "उखड़े हुए लोग" : संवेदना एवं शिल्प" इस शीर्षक को चुन लिया। जिज्ञासा हर शोध

की जननी होती है। इसी जिज्ञासा को लेकर मैंने कार्यारंभ किया। तब मेरे सामने निम्न प्रश्न थे।

१. उपन्यासकार राजेंद्र यादवजी का व्यक्तित्व कैसा है? उसका उनके कृतित्व पर कहाँ तक प्रभाव पड़ा है?
२. "उखड़े हुए लोग" का वस्तुविन्यास कैसा रहा है?
३. क्या "उखड़े हुए लोग" यह शीर्षक सार्थक है?
४. क्या यादवजी इसमें स्वातंत्र्योतर राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्ति देने में सफ़ल हुए हैं?
५. क्या शरद और जया उखड़े हुए लोगों का प्रतिनिधित्व कर सके हैं?
६. प्रस्तुत उपन्यास की भाषा शैली की कौनसी विशेषताएँ है?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया हैं -

<u>प्रथम अध्याय</u> :- "राजेंद्र यादव : व्यक्तित्व एंव सृजन"

इसके अंतर्गत मैंने राजेंद्र यादव का जीवन परिचय, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, विवाह तथा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। यादवजी सीधे-सादे, सरल, निःस्वार्थी, मद्दगार, स्वाभिमानी, स्वानुभूति के कायल, संघर्षशील और विक्रम मनुष्य है। उनके सृजन के अंतर्गत रचनाधर्मी साहित्यकार, उपन्यासकार, कहानीकार, सहृदय कवि, प्रकाशक, सुदी सम्पादक, अनुवादक, समीक्षक, बाल साहित्य के प्रणेता आदि पक्षों का विवेचन किया है और यादवजी की साहित्यिक कृतियों का नामनिर्देश किया है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> :- "उखड़े हुए लोग" का कथ्य"

प्रस्तुत अध्याय में "उखड़े हुए लोग" उपन्यास की कथावस्तु का समीक्षात्मक विवेचन किया है। उपन्यास की कथावस्तु का परिचय देकर उसकी समीक्षा की है तथा

पूँजीपति एवं राजनीतिज्ञ व्यक्तियों की घृणित राजनीति के कारण छटपटाती, घुटती, सिसकती मध्यवर्गीय लोगों की जिंदगी युद्धोत्तरकालीन स्त्री-पुरूष के बिगड़ते-बदलते बनते सम्बन्ध आदि का चित्रण किया है। साथ-साथ शीर्षक की सार्थकता का विवरण भी अध्याय के अन्त में दिया है।

तृतीय अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" की सामाजिक संवेदना"

उक्त अध्याय के अंतर्गत मैंने संवेदना शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसका विवेचन किया है। और आधुनिक सामाजिक व्यवस्था समाज में फैल रही रूढियाँ, स्त्री-पुरूषों में बिगड़ते-बदलते बनते सम्बन्धों का वर्णन किया है।

चतुर्थ अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" की राजनीतिक संवेदना"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत राजनीति की व्याख्या करते हुए साहित्य और राजनीति के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करते हुए राजनीतिक उपन्यास की परिभाषा दी है। स्वातंत्र्योत्तर काल में कुटिल और घृणित राजनीति ने किसतरह जन्म लिया है इसका विवेचन किय है। जिसमें आजादी के बाद फैली गंदी राजनीति के विविध पहलूओं को प्रकट किया हैं। जिसमें खद्दर के आड़ में नेतागिरी, वासनांधता, अवसरवादी प्रवृत्ति, राजनीतिक हत्याएँ, कलम पर कब्जा, भ्रष्टाचार, आंदोलनकारी प्रवृत्तियाँ, मजबूर और जरूरतमंदों का शोषण आदि पहलुओं का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय :- "उखड़े हुए लोग" का शिल्प"

इस अध्याय के अंतर्गत भाषा तथा शैली का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है। भाषा के विवेचन में शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप, भाषा सौदर्य के साधन, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुहावरें, सूक्तियाँ, वाक्य-विन्यास आदि प्रकारों का साधार वर्णन प्रस्तुत किया है।

शिल्प के अंतर्गत शैली के स्वरूप का विवेचन करके "उखड़े हुए लोग" में प्रयुक्त विविध शैलियों का जैसे - विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, पूर्व-दीप्ति, चेतनाप्रवाह,

आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, सांकेतिक, मनोविश्लेषणात्मक, नाटय, प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का सोदाहरण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :-

सभी अध्यायों के विवेचन से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में उपसंहार में दिये हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :-

इसके अंतर्गत ग्रंथ तथा समीक्षा ग्रंथों की सूची दी है।

ऋण-निर्देश :-

किसी कार्य को संपन्न करने के लिए योजना बनानी आवश्यक होती है। प्रस्तुत शोध-कार्य को संपन्न करने के लिए मैंने भी योजना बनायी थी। जिसके कार्यान्वयन के समय कठिनाईयों को सुलझाने के लिए मुझे कई व्यक्तियों और संस्थाओं की सहायूयता लेनी पड़ी। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

पहले तो मैं प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति का श्रेय श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटीलजी को देना श्रेयस्कर मानता हूँ। जब-जब मेरे सामने कठिनाईयाँ आयी तब-तब आपने बड़े स्नेह से समझाया और आत्मीय मार्गदर्शन से मुझे प्रेरित किया हे। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी आपने पग-पग पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे मंजिल की ओर अग्रसर किया। अतः आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। आपकी प्रेरणा और आशिर्वाद का मैं निरन्तर अभिलाषी हूँ। डॉ.अर्जुन चव्हाणजी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे पूज्य माता-पिता जो जीवनभर कष्ट सहते हुए हमें अकेला छोड़ के हमेशा के लिए चले गये हैं। उनकी यादें तथा उनके विचार ही मुझे हमेशा कुछ करने

के लिए उकसाते रहते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध भी उनके आशीर्वाद का फल है। अतः उनके चरण कमलों पर मेरा यह संकल्प अर्पित है।

अपने व्यक्तिगत जीवन में मैं जिनका अत्यंत आदर करता हूँ वे मेरे चाचा मृत्युंजयकार श्री.शिवाजी सावंत का मैं अत्यंत ऋणी हूँ। आपने हमेशा प्रेरणाभरे खत लिखकर मेरा हौसला बढ़ाया है।

मेरे बड़े भैया श्री.रणजित की प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहयोग ही मेरा बल है। इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में आपने मेरी पूरी आर्थिक तथा मानसिक मदद की है। अतः मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करूँगा मेरी भतिजी कु.श्रद्धा, मेरे बड़े भैया विनोद, अजित, मेरी बहन कल्पना और श्रीमती भाभीजी आदि मेरे परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग के बिना मेरे जीवन का हर कार्य अधूरा रह जाता। अतः इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध का टंकन ऐश्वर्या झेरॉक्स कोल्हापुर के श्री.मिलिंद भोसलेजी ने बड़ी लगन से किया है। अतः मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ.खर्डेकर पुस्तकालय का सहयोंग प्राप्त हुआ। अतः इस पुस्तकालय के सभी सेवकों का मैं आभारी हूँ।

मेरे स्वजन श्री.किरण पाटोळे, कलंदर मुल्ला, अरूण गंभिरे, अरूण चौधरी, पंडित वरूटे, कल्पना पाटील आदि ने इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरी सहायूयता की है। अतः मै उनके प्रतित भी कृतज्ञ हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में जिनसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैं उन कृतिकारों और कृतियों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मुझे इस शोधकार्य में हुआ है।

इस कृतज्ञता-ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र,

(श्री. मोहन मंगेशराव सांवत)

कोल्हापुर।

दि. २६ दिसम्बर १९९६